वेद के ज्ञान भंडार को खोजती पगडंडियां

रामदेव मिश्र

'कहानी' यद्यपि समय के विभाजन के क्रम में अतीत से सम्बन्ध रखती है, किन्तु वर्तमान के पोषण और भविष्य के रेखांकन के लिए उसकी उपयोगिता सदा से रही है। यह भी कहा जा सकता है कि जीवन के शुष्क और कठोर यथार्थ में यदि किसी छोर पर कोई शीतल तलहटी दिखाई पड़ती है तो वह इतिहास, आख्यान, जीवन वृत्त, मिथक या कहानी ही है। वास्तव में यह वर्तमान का विस्मरण न होकर उसकी नीव को बार–बार पक्का कर लेने के संकल्प को ही जन्म देती है। इससे भी आगे कहानी हमें एक तटस्थ भावबोध प्रदान करती है जो हमारे सत्यनिष्ठ जीवन दर्शन के लिए आवश्यक है।

कहानी के माध्यम से जीवन–शिक्षा भारतीय प्रज्ञा का सनातन आदर्श है। रामायण, महाभारत, पुराण, पंचतंत्र हितोपदेश आदि इस व्यवहारिक दर्शन के सर्वमान्य पक्ष है। क्या 'वेद' भी इस दर्शन के प्रवर्तक है, यह प्रश्न सहज ही उठता है। वास्तव में मानवीय स्वभाव कोरे उपदेश, धर्म आदेश तथा स्वर्ग के प्रलोभन और नर्क का भय आसानी से स्वीकार नहीं करता। अनेक धर्मग्रन्थ अपने इन्हीं आग्रहों के कारण अछूते और अनपढ़े रह जाते है। एक सीमा तक वेदों के साथ भी ऐसा ही हुआ है।

श्री प्रभुदयाल मिश्र ने अपनी 'वेद की कहानियां' पुस्तक में वेद के इसी लोक रंजक पक्ष की तलाश की है। सभा, संसद और बौद्धिक विमर्श में हम वेदों का उल्लेख लगातार करते है, किन्तु इनकी विषयवस्तु की हमें प्रायः जानकारी नहीं रहती। यह सही है कि वेदों का कलेवर बहुत विस्तृत है तथा जब संहिता भाग के अतिरिक्त इनमें ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों को सम्मिलित कर हम इन्हें समझना चाहते है, तो इनके सार सम्प्रेषण में प्रायः कठिनाई होती है। श्री मिश्र ने अपनी इस कृति के माध्यम से बड़ी दूरी तक इसी समस्या का समाधान किया है। विशेषकर इस पुस्तक की विस्तृत भूमिका इसी आशय को परिपुष्ट करती है।

लेखक का यह कथन सही है कि वेद की कहानियां प्रायः सूत्रात्मक हैं। इतिहास, पुराणों और आख्यान साहित्य से भिन्न इनके समापन और उपसंहार से तत्काल कोई संदेश या निष्कर्ष भी ज्ञात करना प्रकट नहीं होता। इसका एक कारण यह माना जा सकता है कि उस काल में कथा का शिल्प संभवतः उतना विकसित नहीं था, जैसा कि कालान्तर में हुआ। दूसरे वैदिक युग की कथाओं में काव्यात्मकता तथा व्यंजना की ही प्रधानता है। इनकी शैली सामासिक और सूत्रात्मक है। इनके कथनों की व्याख्या को कितना भी विस्तार दिया जा सकता है, किन्तु उनकी शब्द, शिल्प और साक्षात्कार की क्षमता में उनका कथन अर्थ गंभीरता से युक्त है।

वास्तव में इस पुस्तक की सबसे अधिक उपयोगिता ऐसे सामान्य पाठकों, विशेषकर विद्यार्थियों के लिए निर्विवाद रूप से है जो कहानी की पगडंडी से सहारे वैदिक ज्ञान–प्रान्तर में प्रवेश करना चाहते है। संभवतः मिश्र जी इस दिशा में कुछ और विस्तार में जाकर कुछ और अल्प ज्ञात कथानकों को आयाम दे सकते थे, किन्तु इस दिशा में उनकी यह पहल सर्वथा वरेण्य है।

पुस्तक – 'वेद की कहानियां'

लेखक — प्रभुदयाल मिश्र
प्रकाशक — मदन बुक हाउस दिल्ली
मूल्य — 120 रूपये

रामदेव मिश्र,
सिविल लाइन्स, टीकमगढ़